व्यंग्य

गालिब का असली सच मिल गया

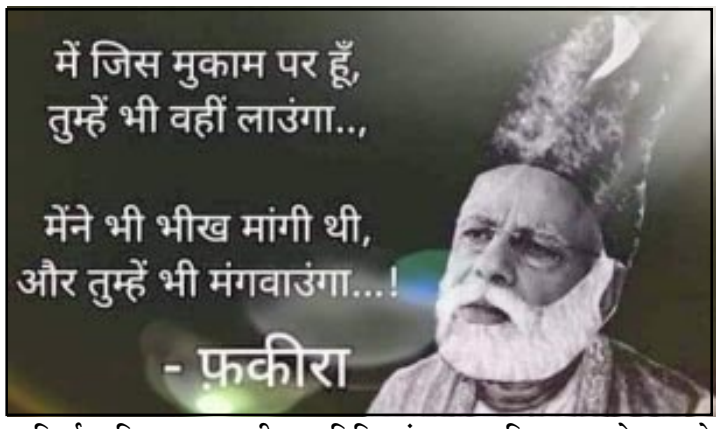

मिर्जा ग़ालिब का असली नाम मिहिर चंद्र गुलाब मिश्रा था, वो जन्म से सच्चे सनातनी और प्रकांड विद्वान ब्राह्मण थे, उन्होंने तमाम संस्कृत श्लोक तथा काव्य खंडों की रचना की, किंतु उनकी मृत्यु के पश्चात मुगलों तथा अंग्रेजों ने मिलकर भारतीय संस्कृति को मिटाने के लिए उनकी रचनाओं को उर्दू में अनुवाद करवा दिया और उनका नाम परिवर्तित करके मिर्जा गालिब कर दिया, उनके जन्मदिवस पर हम संकल्प लेते हैं कि गुलाब मिश्रा जी को भारतीय संस्कृति में उनका खोया हुआ स्थान पुनः वापिस दिलवाकर ही दम लेंगे.....

गुलाब मिश्रा अमर रहें.....

जो शेर आप बरसों से सुनते आ रहे हैं, वो असली में ऐसे थे -

शिशु क्रीड़ा क्षेत्र है विश्व मेरे समक्ष
होता है अहर्निश स्वांग मेरे समक्ष!!

(बाज़ीचा-ए-अतफ़ाल है दुनिया मिरे आगे
होता है शब-ओ-रोज़ तमाशा मिरे आगे)

प्रत्येक विषय पर महोदय कहते हैं कि तू क्या है
आप विश्लेशित करें ये वार्तालाप शैली क्या है

(हर एक बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है
तुम्हीं कहो कि ये अंदाज़-ए-गुफ़्तुगू क्या है)

न पूछो अवस्था मेरी तुम्हारी अनुपस्थिति में
बस अपने व्यवहार को देखो मेरे समक्ष

(मत पूछ कि क्या हाल है मेरा तेरे पीछे
तू देख कि क्या रंग है तेरा मेरे आगे)

है अन्य भी जगत में काव्यकार उत्तमोत्तम
तथापि कहते हैं सर्वजन गुलाबसिंह की काव्य शैली है अन्यतम

(हैं और भी दुनिया में सुख़न-वर बहुत अच्छे
कहते हैं कि ग़ालिब का है अंदाज़-ए-बयाँ और)

दुर्बल गुलाब सिंह की अनुपस्थिति में, कौन से कार्य बंद हैं
करुण क्रंदन क्यों करें, करें आह आह क्यों

(ग़ालिब-ए-ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बंद हैं
रोइए ज़ार ज़ार क्या कीजिए हाए हाए क्यूँ)

शिराओं में आवागमन हेतु हम नहीं अभीभूत
जब नेत्र से ही न टपके तो फिर रूधिर क्या है

(रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं क़ाइल
जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है)

इसलिए वे राष्ट्रपिता हैं

इसलिए वे राष्ट्रपिता हैं - 1

"हमे यह नहीं भूलना चाहिए कि गांधी को हमने राष्ट्रपिता कहा है न कि भारत पिता या हिंदुस्तान का पिता । गांधी से पहले भारत या हिंदुस्तान देश था, लेकिन राष्ट्र नहीं था । देश भौगोलिक संकल्पना है। नदी, पहाड़, प्रदेश इनकी सीमाओ से बनता है । राष्ट्र तो उस देश मे रहने वाले नागरिकों के परस्पर साथ जीने के नित्य संकल्प से उजागर होता है। यह सटीक बात पद्मभूषण न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने राकेश पाण्डेय के संचयन व सम्पादन पुस्तक 'गांधी और हिन्दी' की भूमिका मे लिखी है ।

राष्ट्रवाद की विभिन्न अवधारणओं से आगे जाकर वे कहते हैं "ऐसी राष्ट्रभावना स्वतंत्रता आंदोलन मे गांधीजी ने निर्माण की। कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक और द्वारका से लेकर दिबरुगढ तक की जनता कंधे से कंधा मिला कर आजादी के आन्दोलन मे एक साथ, समानता और समान भावना से धर्म भाषा और प्रदेश पर आधारित भेदभाव भूलकर शामिल हुई ।"

गांधीजी ने अनेक अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन चलाए उसमें देश के अमीर- गरीब, अनपढ़- पढ़कर, बूढ़े-युवा, आदमी-औरत सभी ने भाग लिया तभी आजादी मिली और भारत एक राष्ट्र बना ।

इसलिए वे राष्ट्रपिता हैं - 2

भारत का प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन 1857 मे हुआ । अँग्रेजो ने बर्बरतापूर्ण कार्यवाही की ।

देश की आज़ादी के लिए गम्भीरतापूर्वक प्रयास होते रहे, बलिदान होते रहे इस बीच 1915 मे गांधीजी भारत आए। मेरे गांधी के लेखक नारायण देसाई लिखते हैं "जब भारत का जनसाधारण राजनीतिक स्वाधीनता के प्रति उदासीन था, गांधी ने उनमे एक राष्ट्रीय आंदोलन पैदा किया । इस लिहाज से, वे राष्ट्रपिता हैं ।"

गांधीजी सकारात्मक राष्ट्रवाद के पैरोकार रहे वे सर्वसमावेशी, विभिन्नता मे एकता का सूत्र लेकर चले। सत्य , अहिंसा, सत्याग्रह उनके साधन रहे जो भारतीय जन मानस मे सदियों से स्थापित मूल्य है इससे उन्होंने विभिन्न धार्मिक, भाषाई, जातिगत, क्षेत्र, समुदाय को एक सूत्र मे समेटा । उन्होंने समान भावना जाग्रत की जो समान परम्परा , समान हित पर आधारित थी ।

महान सेनानी आजाद हिंद फौज के संस्थापक सुभाषचंद्र बोस जिनका आज़ादी का मार्ग पवित्र पर गांधीजी से भिन्न था ने गांधी को राष्ट्रपिता कहा ।

इसलिए वे राष्ट्रपिता हैं - 3
स्वतंत्रता कायर को नहीं मिलती - गांधी

"करेंगे या मरेंगे। या तो हम भारत को आजाद करेंगे या आजादी की कोशिश मे प्राण दे देंगे।" राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने यह विचार 8 अगस्त 1942 को मुम्बई बड़ी संख्या मे उपस्थित अपने अहिंसक अनुयायीओ से कहे। उन्होंने आगे कहा "स्वतंत्रता के लिए हम प्राण दे देंगे .... जो जान देगा उसे जीवन मिलेगा और जो जान बचा लेगा जीवन से वंचित हो जाएगा स्वतंत्रता कायर या डरपोक को नहीं मिलती।"

जैसे- जैसे भाषण समाप्ति की और बढ़ता गया वैसे- वैसे उनकी दृढता और स्पष्ट होती गई । फिर उन्होंने कहा "वर्तमान संघर्ष मे हमे खुल्लम खुल्ला कार्यवाही करनी है और अपनी छाती पर गोलियां खानी है और भागना नहीं है ।"

उनका भाषण सुनकर लोग जोश से भर गए । गांधीजी सहित लाखो गिरफ्तार किए गए । बापू को भी जेल मे डाला गया कस्तूर बां , महादेव देसाई का जेल मे ही निधन हो गया । देश आजाद हो गया । गांधी सहित करोडो लोगों के समर्पण से हमे आजादी मिली। गांधीजी के मार्ग पर ज्यादा लोग चले इसलिए उनको राष्ट्रपिता कहते है ।

इसलिए वे राष्ट्रपिता हैं - 4
मैं दया की प्रार्थना नहीं कर रहा हूं- गांधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने यंग इंडिया मे तीन लेख लिखे । जिनको ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध अनादर, घृणा और अप्रीति माना गया। उन्हें 11 मार्च, 1922 को गिरफ्तार किया और 18 मार्च को अदालत मे प्रस्तुत किया जहां उन्होनें कहा "मैं यहा किसी हल्की नहीं बल्कि बडी से बडी सजा को स्वीकार करने के लिए तैयार हूं । मैं दया की प्रार्थना नहीं कर रहा हूं, जुर्म को हल्का करने वाली किसी कार्यवाही को अपने बचाव के लिए पेश नहीं कर रहा हूं... जो भी बडी से बडी सजा दी जा सकती है मैं वहीं देने को कहता हूं और उसे खुशी से स्वीकार करूँगा। "न्यायाधीश ने 6 साल की सजा दी।

सिडनी रोलेट एक्ट के विरोध मे देशभर मे प्रदर्शन हुए, हिंसा हुई, जलियांवाला बाग, चोरी चौरा, मुम्बई, मद्रास की जिम्मेदारी गांधीजी ने ली। सजा के बाद गांधीजी ने कहा "निश्चित ही यह मेरी दृष्टि मे हल्की से हल्की सजा है ।" सच को स्वीकार करने, जिम्मेदारी लेने, अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग पर चलने से ही गांधी राष्टपिता है ।

स्त्रोत - बापू ने कहा संकलन

इसलिए वे राष्ट्रपिता हैं - 5

"स्वाभिमानी मनुष्य के सामने इसके सिवा दूसरा कोई सुरक्षित और सम्मान युक्त मार्ग नहीं है की आदेश का अनादर करने के बदले में जो दण्ड प्राप्त हो, उसे चुपचाप सहन कर लिया जाए । "यह बात गांधीजी ने जबरन नील की खेती के विरोध मे चम्पारण मे किए सत्याग्रह के दौरान तब कहीं जब उन्हें चम्पारण छोड़ने का आदेश दिया ।

गांधीजी ने आदेश नहीं माना कोर्ट मे पेश हुए । सरकारी वकील सुनवाई मुल्तवी रखना चाहते थे पर गांधी उसी समय सुनवाई चाहते थे । उन्होनें कहा "मुझे चम्पारण छोड़ने के नोटिस का अनादर करने का अपराध स्वीकार करना है । "फिर उन्होनें कहा" आप मुझे जो सजा देना चाहते है उसे कम कराने की भावना से मै यह बयान नहीं दे रहा हूं ।"

कानून तोडना और इसके कारण मिलने वाली सजा को सहर्ष स्वीकार करना ना की उससे बचने के उपाय करना ही सत्याग्रह है ।

सत्याग्रह अथवा कानून की सविनय अवज्ञा की यह घटना उनको राष्ट्रपिता बनाती है जो सत्य की और ले जाती है ।

स्त्रोत - सत्य के प्रयोग

इसलिए वे राष्ट्रपिता हैं - 6

सन 1908 का यह वाकिया इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। यह घटना बताती है की महान लोग अपने देश, उसूल के लिए व्यक्तिगत हित, परिवार हित का त्याग करते हैं ।

उन दिनो गांधीजी अफ्रीका मे थे और जबरन पंजीकरण के विरोध मे जेल मे थे उन को मित्र एलबर्ट वेस्ट पत्र मिला जिसमें पत्नि कस्तूर के अत्यधिक रक्तस्राव होने और अस्पताल मे भर्ती की जरूरत बताते हुए जुर्माना भरने और अपनी सजा कम करवाने को कहा जिससे उनकी उपस्थिति मे इलाज हो ।

गांधीजी ने कस्तूर को लिखा "तुम्हारे स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हूं पर मैं इस स्थिति मे नहीं हूं की वहा पहुचकर तुम्हारी देखभाल कर सकूँ । तुम जानती हो कि मैंने इस संघर्ष के लिए जीवन मे सब कुछ छोड़ दिया । .... तुम्हारी मृत्यु सत्याग्रह के लिए महान बलिदान होगी।" ऐसे ही महान त्याग के लिए गांधीजी राष्ट्रपिता हैं।

-भारत दोसी

मासूम बच्चे खुद को पापी, पतित, चरणों की धूल बताते हुए जाने कौन-कौन सी प्रार्थनाएं नहीं गाते रहे स्कूलों में। डॉ. इकबाल की बच्चों के लिए लिखी गई कविता जैसी अद्भुत, सुच्ची सी प्रार्थना शायद ही कोई दूसरी हो।

।। बच्चे की दुआ ।।

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
जिंदगी शम्अ की सूरत हो खुदाया मेरी!
दूर दुनिया का मिरे दम से अँधेरा हो जाए!
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए!
हो मिरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
जिंदगी हो मिरी परवाने की सूरत या-रब
इल्म की शम्अ से हो मुझ को मोहब्बत या-रब
हो मिरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्द-मंदों से ज़ईफ़ों से मोहब्बत करना
मिरे अल्लाह! बुराई से बचाना मुझ को
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझ को

सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा

अल्लामा इकबाल

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिसताँ हमारा।।
गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में।
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा।। सारेज
परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।। सारेज
गोदी में खेलती हैं, उसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।सारेज
ऐ आब-ए-रूद-ए-गंगा! वो दिन है याद तुझको।
उतरा तेरे किनारे, जब कारवाँ हमारा।। सारेज
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा।। सारेज
यूनान-ओ-मिस्त्र-ओ-रूमा, सब मिट गए जहाँ से।
अब तक मगर है बाक़ी, नाम-ओ-निशाँ हमारा।। सारेज
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-ज़माँ हमारा।। सारेज
'इक़बाल' कोई महरम, अपना नहीं जहाँ में।
मालूम क्या किसी को, दर्द-ए-निहाँ हमारा।। सारे..